Dr. Parikshit Kr. Singh
Associate Prof.
Dept. of L.S.W.
SNSRKS Collg., Saharsa

श्रम बाजार
(LABOUR MARKET)

(Nature and characteristics)

श्रम बाजार की प्रकृति एवं विशेषताएँ

सामान्य अर्थों में 'बाजार' से ऐसे स्थान या क्षेत्र का बोध होता है जहाँ क्रय और विक्रय के कार्य सम्पन्न होते हैं। अर्थशास्त्र में 'बाजार' का प्रयोग कुछ विशेष अर्थों में किया जाता है, लेकिन मुख्य रूप से इसे ऐसे क्षेत्र के रूप में देखा जाता है जिसमें क्रेताओं और विक्रेताओं के बीच इस तरह का संबंध स्थापित होता है कि उस क्षेत्र में एक समय में किसी वस्तु विशेष की कीमत एक ही रहती है। साधारणतः किसी बाजार के क्रेता तथा विक्रेता अधिक संख्या में रहते हैं, लेकिन उसमें कुछ वस्तुओं या सेवाओं के क्रय या विक्रय में एकाधिकार की स्थिति भी पायी जाती है। बाजार स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय हो सकता है। कुछ बाजारों को पूर्ण समझा जाता है, तो कुछ में अपूर्णता के तत्व विद्यमान रहते हैं। कुछ बाजार अल्पकालीन होते हैं, तो कुछ दीर्घकालीन।

'श्रम बाजार' से भी साधारणतः ऐसे स्थान या क्षेत्र का बोध होता है जहाँ श्रमिकों की सेवाओं का क्रय-विक्रय होता है। इसमें भी श्रम के क्रेताओं और विक्रेताओं के बीच ऐसा संबंध बना रहता है कि किसी समय विशेष में किसी विशेष प्रकार के श्रम की कीमत या मजदूरी-दर एक होती है। श्रम बाजार भी स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय हो सकता है। कुछ श्रम-अर्थशास्त्री श्रम बाजार को एक प्रक्रिया के रूप में देखते हैं जिसमें श्रम की सेवाओं के क्रेताओं और विक्रेताओं के बीच संबंध बना रहता है तथा श्रम की माँग और पूर्ति में संतुलन बनाये रखता है।

कई बातों में श्रम बाजार वस्तु बाजार (commodity market) की तरह ही होता है। वस्तु बाजार की तरह श्रम बाजार में भी क्रेता और विक्रेता होते हैं जो श्रम सेवाओं का क्रय-विक्रय करते हैं। जिस तरह वस्तु बाजार में वस्तुओं के विक्रेता अपने सामानों के लिए अधिक-से-अधिक कीमत प्राप्त करना चाहते हैं तथा उन सामानों के क्रेता कम-से-कम कीमत देना चाहते हैं, उसी तरह श्रम बाजार में भी श्रम के विक्रेता अपनी सेवाओं को अधिक-से-अधिक कीमत या मजदूरी पर बेचना चाहते हैं, जबकि उनके क्रेता अर्थात् नियोक्ता कम-से-कम मजदूरी देना चाहते हैं। आर्थिकता के दृष्टि से, वस्तु बाजार की तरह

Scanned with CamScanner

श्रम बाजार में भी श्रम सेवाओं के क्रेता तथा विक्रेता दोनों उपस्थित होते हैं। वस्तु तथा श्रम दोनों बाजारों में खरीद-बिक्री के सिलसिले में धन का हस्तान्तरण होता रहता है। इन समानताओं के बावजूद श्रम बाजार की कुछ विशेषताएँ या विलक्षणताएँ हैं जो इसे वस्तु बाजार से भिन्न कर देती हैं, इनमें महत्वपूर्ण विशेषताएँ या विलक्षणताएँ निम्नलिखित हैं —

1. श्रम बाजार मुख्य रूप से स्थानीय बाजार होता है (Labour Market is essentially a Local Market).

यद्यपि श्रम बाजार स्थानीय, क्षेत्रीय, राज्य स्तर के, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय हो सकते हैं, अधिकांश श्रम बाजार स्थानीय होते हैं। पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक तथा कई अन्य कारणों से बड़ी संख्या में लोग अपने घरों के नजदीक ही काम करना पसंद करते हैं। उनके श्रम की सेवाओं को खरीदने वाले भी आस-पास ही मिल जाते हैं। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में बड़ी मात्रा में श्रम सेवाओं का क्रय-विक्रय स्थानीय स्तर पर ही होता है। [illegible] औद्योगिक केन्द्रों में भी अकुशल, अर्द्धकुशल तथा सामान्य कौशल वाले श्रम सेवाओं का भी क्रय-विक्रय अधिकांशतः स्थानीय स्तर पर होता है। सामान्यतः, अत्यधिक कुशल, तकनीकी, प्रशासनिक, प्रबन्धकीय तथा विशेष योग्यता वाले श्रम सेवाओं के लिए श्रम बाजार का विस्तार-क्षेत्र बड़ा होता है। जिन देशों में बेरोजगारी की समस्या गंभीर नहीं होती, उनमें श्रमिक काम की खोज में दूर-दूर जाना पसंद नहीं करते।

2. क्रेताओं की तुलना में विक्रेताओं का अधिक संख्या में होना (Number of sellers more than that of Buyers).

किसी भी बाजार में, विशेषकर पूर्ण बाजार में, वस्तुओं या सेवाओं के क्रेताओं एवं विक्रेताओं का बड़ी संख्या में होना आवश्यक है। व्यवहार में, वस्तु बाजार में विक्रेताओं की तुलना में क्रेताओं की संख्या अधिक होती है। इसके विपरीत, श्रम बाजार में श्रम सेवाएँ बेचने वाले बड़ी संख्या में होते हैं जबकि उन्हें खरीदने वाले कम संख्या में। कुछ स्थानों में कुछ-गिने नियोजक ही बड़ी संख्या में श्रमिकों को नियोजित करते हैं। कई श्रम बाजारों में एक क्रेताधिकार (monopsony) या अल्पक्रेताधिकार (oligopsony) की स्थिति बनी रहती है। पूर्ण बाजार में क्रेताओं और विक्रेताओं के बड़ी संख्या में होने के कारण, किसी व्यक्तिगत क्रेता या विक्रेता

Scanned with CamScanner

अथवा उनके छोड़ने से मजदूर के लिए बाजार को प्रभावित करना संभव नहीं होता लेकिन, श्रम बाजार में "विक्रेताओं की सेवाओं को खरीदने में सक्रिय रूप से प्रतिस्पर्धा करनेवाले क्रेताओं की संख्या प्रायः ही बहुत अधिक होती है।"

3. वैयक्तिक एवं सामाजिक कारकों का महत्व (Importance of Personal and Social Factors)

श्रम बाजार में श्रम की मांग और पूर्ति, मजदूरी के स्तर, तथा श्रम सेवाओं की प्रकृति आदि के निर्धारण में वैयक्तिक एवं सामाजिक कारकों का महत्वपूर्ण प्रभाव होता है। श्रम बाजार में श्रम के विक्रेता केवल अपनी व्यक्तिगत सेवाओं को ही बेच सकते हैं। वे दूसरों की सेवाओं को नहीं बेच सकते। लेकिन कई श्रम सेवा को क्रेता को उपलब्ध कराने के लिए उनके विक्रेता को नियोजक स्थान पर व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होना पड़ता है। श्रम के कई क्रेता एक ही मजदूरी-दर पर अपनी पसंद के श्रमिकों को नियोजित करते हैं। इसी तरह, समान मजदूरी-दर पर भी श्रम के विक्रेता अपनी पसंद के नियोजक के प्रतिष्ठान में काम करना पसंद करते हैं। ब्लूम और नॉर्थरुप (Bloom and Northrup) के शब्दों में, "विक्रेता की नजरों में, प्रत्येक क्रेता प्रत्येक दूसरे क्रेता से भिन्न होता है। कुछ श्रमिक बड़ी कम्पनी के लिए काम करना पसंद करते हैं, तो कुछ छोटी कम्पनी के लिए।" श्रम की मांग और पूर्ति में असंतुलन तथा बाजार की कुछ विशेष दशाओं में श्रम सेवाओं के कई विक्रेताओं को बेरोजगारी का सामना करना पड़ता है। "बेरोजगारी का श्रमिकों के परिवारों तथा अनेक समुदायों पर प्रभाव पड़ता है। यह राजनैतिक प्रवृत्ति को भी प्रभावित कर सकती है।" बेरोजगारी की स्थिति में श्रम सेवाओं के कई विक्रेता बाजार-दर से कम मजदूरी पर भी काम करने के लिए बाध्य हो जाते हैं। श्रम बाजार के कई वैयक्तिक एवं सामाजिक पहलुओं को ध्यान में रखते हुए सरकार की ओर से श्रम नीति की रूपरेखा भी बनाई गई है। इस नीति में बाल एवं महिला श्रम का नियमन, समाज के दुर्बल समूहों जैसे अनुसूचित जातियों और जन-जातियों के लिए आरक्षण, शिक्षित बेरोजगारों के लिए रोजगार के विशेष कार्यक्रम आदि को विशेष रूप से उल्लेखित किया जा सकता है।

4. श्रम सेवाओं को भविष्य में विक्रय के लिए संचित नहीं किया जा सकता (Labour Services cannot be stored up for sale in Future).

वस्तु श्रम-वस्तु बाजार में विक्रय के लिए कई प्रकार के

Scanned with CamScanner

वस्तुओं को संचित किया जा सकता है। लेकिन श्रम बाजार में श्रम सेवाओं को बेचने के लिए संचित नहीं किया जा सकता है, क्यों कि श्रम नाशवान है। यदि इसका प्रयोग न किया जाय है, तो यह नष्ट हो जाता है। "श्रम की यह अति नाशवान प्रकृति श्रम बाजार में अत्यावश्यक के विक्रय बाध्यता को उत्पन्न करती है।" इससे बाजार की अपेक्षा श्रम बाजार की सिद्धोपता को प्रदर्शित करती है।

5. श्रम सेवाओं में व्यापक विषमताएँ (Wide Heterogeneity in Labour services)

श्रम बाजार में एक ही तरह के कौशल वाले भी दो श्रमिकों की सेवाएं समान नहीं होती। एक ही श्रमिक की श्रम-सेवाओं की प्रकृति समय और परिस्थितियों के अनुसार बदलती रहती है।

श्रम बाजार में श्रम की इकाइयों में भी अन्तर पाया जाता है। कई श्रमिकों को घण्टे के अनुसार, कई को दैनिक, कई को साप्ताहिक तथा कई को मासिक दर पर भुगतान किया जाता है। "शक्ति, कौशल, रुझान, तथा अभिरुचि के भिन्न होने के कारण, वैयक्तिक सेवाओं को स्वतन्त्र रूप से समरूप इकाइयों में विभाजित नहीं किया जा सकता। श्रम इकाइयों में इन विभिन्नताओं के चलते श्रम बाजार में मजदूरी निर्धारण जटिल हो जाता है।

6. श्रम सेवाओं की कीमत में एकरूपता का नहीं होना (NO Uniformity in the price of Labour services).

वस्तु बाजार में किसी खास समय में वस्तु की केवल एक ही कीमत होती है लेकिन श्रम-बाजार में ऐसी बात नहीं होती है। इसमें अलग-अलग नियोक्ताओं के श्रमिकों के लिए अलग-अलग मजदूरी दरें भी होती हैं। अलग-अलग स्थान हो सकता इसमें एक ही तरह के श्रम सेवा के लिए अलग-अलग श्रमिकों को अलग-अलग मजदूरी दे सकता है।

7. श्रम की सीमित गतिशीलता (Limited Mobility of Labour).

वस्तु बाजार में वस्तुओं को बेचने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान तक आसानी से लाया जा सकता है। श्रम बाजार में श्रम सेवाओं को एक स्थान से दूसरे स्थान में पहुँचाने में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं। एक देश में बने सामान विश्व के अनेक देशों में बिकते रहते हैं लेकिन श्रमिक आसानी से एक जगह से दूसरी जगह नहीं जा सकते। पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक तथा अन्य कारणों से बड़ी संख्या में श्रमिक काम के लिए अपने घर से दूर नहीं जाना चाहते। श्रम की सीमित गतिशीलता के कारण श्रम की माँग और पूर्ति में समुचित संतुलन नहीं बना रहता।

8. बाजार की दशाओं का सीमित ज्ञान (Limited Knowledge of Market Condition)

Scanned with CamScanner

पूर्ण बाजार होने के लिए यह आवश्यक है कि क्रेताओं और विक्रेताओं को बाजार की दशाओं एवं विभिन्नताओं का ज्ञान हो। वस्तु बाजार में वस्तुओं के क्रेताओं और विक्रेताओं को बाजार की दशाओं का अधिक ज्ञान रहता है और वे उसको ध्यान में रखते हुए सामानों का क्रय विक्रय करते हैं। श्रम बाजार में श्रम सेवाओं के क्रेताओं तथा विक्रेताओं दोनों में इस ज्ञान की कमी पायी जाती है। रेनॉल्ड्स (Reynolds) के अनुसार "श्रमिकों को उपलब्ध नौकरियों की तथा नियोजकों को उपलब्ध श्रमिकों की सीमित जानकारी रहती है।" फेल्प्स (Phelps) के शब्दों में, "श्रम सेवाओं के क्रेता तथा विक्रेता दोनों उपलब्ध सुविधाओं, प्रतिस्पर्धी कीमतों तथा संभावित अवसरों के बारे में पूर्ण अज्ञानता के साथ आगे रहते हैं। बाजार की दशाओं के बारे में जानकारी के अभाव या अपूर्ण जानकारी के कारण श्रम बाजार में श्रम की माँग और पूर्ति में तत्-क्षण समायोजन कठिन होता है।

9 प्रतिस्पर्धा में कई तरह के हस्तक्षेप (Several Kinds of Intervention in Competition).

हम कह सकते हैं कि वस्तु बाजार अपनी पूर्ण बाजार अवस्था के प्रतियोगिता के सिद्धान्त पर आधारित रहता है। इसमें वस्तु एवं सेवाओं के क्रेता तथा विक्रेता स्वतंत्रतापूर्वक उनका क्रय-विक्रय करते हैं तथा बाजार की शक्तियों द्वारा ही कीमत का निर्धारण होता रहता है। श्रम बाजार में श्रम सेवाओं के क्रेताओं तथा विक्रेताओं दोनों पर कई तरह के अंकुश लगे रहते हैं तथा उन सेवाओं की कीमत के निर्धारण में भी विभिन्न प्रकार के हस्तक्षेप होते रहते हैं। श्रम संघ सामूहिक सौदेबाजी तथा अन्य प्रकार की कार्यवाहियों के जरिए मजदूरी-दरों को ऊँचा करने रखने का प्रयास करते रहते हैं। वे श्रम की पूर्ति पर भी तरह-तरह के अंकुश लगाते रहते हैं। नियोजक भी अपने संगठनों के माध्यम से श्रम सेवाओं की कीमत तथा श्रम की माँग को प्रभावित करते रहते हैं। श्रम कानूनों द्वारा बाल श्रम, महिलाओं के नियोजन, नौकरी में आरक्षण, विभिन्न प्रकार के कार्यों या नियोजनों में विशेष कोटियों के व्यक्तियों के प्रवेश पर अंकुश, नियोजन कार्यालयों द्वारा रिक्त स्थानों में भर्ती आदि को नियंत्रित किया जाता है। इन सभी हस्तक्षेपों के कारण श्रम बाजार में अबाध प्रतिस्पर्धा संभव नहीं होती तथा उसमें अपूर्णता के तत्व विद्यमान रहते हैं।

उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि श्रम बाजार की कई ऐसी विशेषताएँ हैं जो वस्तु बाजार में विद्यमान नहीं रहतीं। श्रम बाजार वास्तव में अपूर्ण बाजार होता है। इसमें बाजार की शक्तियों के स्वतंत्रतापूर्वक क्रियाशील होने पर कई तरह की रुकावटें आती ही रहती हैं।

—x—

Scanned with CamScanner